एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भारतीय बीज क्षेत्र (Indian Seed Sector)

(*अनिल कुल्हैरी एवं प्रमोद)
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
संवादी लेखक का ईमेल पता: kulherianil@gmail.com

स्थायी कृषि के लिए बीज बुनियादी और सबसे महत्वपूर्ण इनपुट है। अन्य सभी आदानों की प्रतिक्रिया काफी हद तक बीजों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। यह अनुमान लगाया गया है कि कुल उत्पादन में अकेले गुणवत्ता वाले बीज का प्रत्यक्ष योगदान फसल के आधार पर लगभग 15–20% है और इसे अन्य आदानों के कुशल प्रबंधन के साथ 45% तक बढ़ाया जा सकता है।

- भारत में बीज उद्योग में विकास, विशेष रूप से पिछले 30 वर्षों में, बहुत महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय बीज परियोजना चरण I (1977–78), चरण II (1978–79) और चरण III (1990–1991) के माध्यम से भारत सरकार द्वारा बीज उद्योग का एक प्रमुख पुनर्गठन किया गया था, जो उस समय के आसपास सबसे अधिक आवश्यक और प्रासंगिक बीज बुनियादी ढांचे को मजबूत किया। इसे एक संगठित बीज उद्योग को आकार देने में पहला महत्वपूर्ण मोड़ कहा जा सकता ळें
- नई बीज विकास नीति की शुरूआत (1988 – 1989) भारतीय बीज उद्योग में एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जिसने बीज उद्योग के चरित्र को ही बदल दिया। इस नीति ने भारतीय किसानों को दुनिया में कहीं भी उपलब्ध सर्वोत्तम बीज और रोपण सामग्री तक पहुंच प्रदान की। नीति ने भारतीय बीज क्षेत्र में निजी व्यक्तियों, भारतीय कॉरपोरेट और बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा प्रशंसनीय निवेश को प्रोत्साहित किया, प्रत्येक बीज कंपनियों में उत्पाद विकास के लिए मजबूत R&D आधार के साथ अनाज और सब्जियों के उच्च मूल्य संकर और बीटी कपास जैसे उच्च तकनीक उत्पादों पर अधिक जोर दिया। नतीजन, किसान के पास उत्पाद का व्यापक विकल्प है और बीज उद्योग आज 'किसान केंद्रित' दृष्टिकोण के साथ काम करने के लिए तैयार है और बाजार संचालित है।
- हालांकि, राज्य बीज निगमों को भी बुनियादी ढांचे, प्रौद्योगिकियों, दृष्टिकोण और प्रबंधन संस्कृति के संदर्भ में उद्योग के साथ खुद को बदलने की तत्काल आवश्यकता है ताकि वे प्रतिस्पर्धी बाजार में जीवित रह सकें और राष्ट्रीय स्तर पर अपने योगदान को बढ़ा सकें। खाद्य और पोषण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाने का प्रयास।
- निजी क्षेत्र ने पिछले कुछ वर्षों में बीज उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी है। वर्तमान में, बीज उत्पादन या बीज व्यापार में लगी कंपनियों की संख्या 700 से अधिक है। हालांकि, निजी बीज कंपनियों का मुख्य ध्यान उच्च मूल्य वाले कम मात्रा के बीज और कम मूल्य वाले उच्च मात्रा के बीज बीज के बाजार पर रहा है।
- अनाज, दलहन और तिलहन में अभी भी सार्वजनिक क्षेत्र के बीज निगमों का दबदबा है। मुख्य रूप से मक्का और सूरजमुखी और कपास के मामले में निजी क्षेत्र की कंपनियों का महत्वपूर्ण स्थान है। हालांकि, सब्जी के बीज और बागवानी फसलों की रोपण सामग्री के मामले में निजी क्षेत्र प्रमुख खिलाड़ी है। चूंकि निजी क्षेत्र गेहूं, धान, अन्य अनाज, तिलहन और दलहन की उच्च मात्रा वाली कम मार्जिन वाली फसलों के बीज उत्पादन में प्रवेश करने के बारे में उत्साहित नहीं है, इसलिए

सार्वजनिक क्षेत्र के बीज निगम अनाज, दलहन और तिलहन में कई और वर्षों तक हावी रहेंगे। आने वाले वर्षों में ।

- भारतीय राष्ट्रीय बीज निगम और भारतीय राज्य फार्म निगम देश में कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा, राज्य के कृषि विभागों द्वारा भी महत्वपूर्ण मात्रा में बीज का उत्पादन किया जाता है, जहां राज्य बीज निगम अस्तित्व में नहीं हैं।